

08⁰¹/₂₅ आज यह पत्रावली पेश हुयी।
बहुलाय मेरी भी उप० गयी है। वही
व वही कमील के धार-धार आवाज
लगाते गये किन्तु मेरी भी उप०
नही है। वही व वही कमील के
बार बार आवाज लगाते गये कि
ये वाक्य रचना आरु है। श्रेय
आरु रहे है पत्रावली आरु ए। जरी
आरु पेटवी के खोज की जाती
है। पत्रावली केवल शुभाह होकर
जम्बर से मरु है। वाप शर शरि
आरु है।

उपराज अधिकारी
बहरोड (कोटपुतली-बहरोड)